|| Om bhurbhuvah svah tatsaviturvarenyam
bhargo devasya dhimahi dhiyo yo nah prachodayat ||

वर की प्रतिज्ञाएँ

- ऋषि प्रणीत गृहस्थ आश्रम में प्रवेश के संदर्भ में, देव शक्तियों, अग्निदेव, हितैषियों एवं सत्पुरुषों की साक्षी में निष्ठापूर्वक प्रतिज्ञा करता हूँ कि-
- आज से धर्मपत्नी को अर्धाङ्गिनी घोषित करते हुए, उनके साथ अपने व्यक्तित्व को मिलाकर नये जीवन की सृष्टि करता हूँ। अपने शरीर के अंगों की तरह धर्मपत्नी का ध्यान रखूँगा।
- धर्मपत्नी को प्रसन्नतापूर्वक गृहलक्ष्मी का महान् अधिकार सौंपता हूँ। जीवन की गतिविधियों के निर्धारण में इनके परामर्श को महत्त्व दूँगा।
- अर्धाङ्गिनी के रूप, स्वास्थ्य, स्वभाव, गुण-दोष एवं अज्ञानजनित विकारों को चित्त में नहीं रखूँगा, उनके कारण असन्तोष नहीं व्यक्त करूँगा, स्नेहपूर्वक सुधारने या सहन करते हुए आत्मीयता बनाये रखूँगा।
- पत्नी का मित्र बनकर रहूँगा और पूरा-पूरा स्नेह देता रहूँगा, साथ ही सहनशील और मधुरभाषी बनकर रहूँगा।
- पत्नी के लिए जिस प्रकार पतिव्रत की मर्यादा कही गयी है, उसी दृढ़ता से स्वयं पत्नीव्रत धर्म का पालन करूँगा। अपने विचार एवं आचरण इसी मर्यादा के अनुरूप विकसित करूँगा।
- गृह व्यवस्था में धर्मपत्नी को प्रधानता दूँगा। आमदनी और खर्च का क्रम उनकी सहमति से करने की मर्यादा अपनाऊँगा।
- धर्मपत्नी की सुख-शान्ति तथा प्रगति-सुरक्षा की व्यवस्था करने में, अपनी शक्ति और साधन आदि को पूरी ईमानदारी से लगाता रहूँगा।
- अपनी ओर से श्रेष्ठ व्यवहार बनाए रखने का पूरा-पूरा प्रयत्न करूँगा। मतभेदों और भूलों का सुधार शान्ति के साथ करूँगा। किसी के सामने पत्नी को अपमानित नहीं करूँगा।
- पत्नी के असमर्थ हो जाने पर भी, अपने सहयोग और कर्त्तव्यपालन में रत्तीभर भी कमी न रखूँगा, ऐसा विश्वास दिलाता हूँ।

Shantikunj, Haridwar • Tel: +91.1334.260602 • Fax: 260866 • Email: shantikunj@awgp.org

|| Om bhurbhuvah svah tatsaviturvarenyam
bhargo devasya dhimahi dhiyo yo nah prachodayat ||

वधू की प्रतिज्ञाएँ

- ऋषि प्रणीत गृहस्थ आश्रम में प्रवेश के संदर्भ में, देव शक्तियों, अग्निदेव, हितैषियों एवं सत्पुरुषों की साक्षी में निष्ठापूर्वक प्रतिज्ञा करती हूँ कि-
- अपने जीवन को पति के साथ मिला कर नए जीवन का निर्माण करूँगी। इस प्रकार हमेशा सच्चे अर्थों में धर्मपत्नी बनकर रहूँगी।
- पति के परिवार के परिजनों को एक ही शरीर के अंग मानकर चलूँगी। सभी के साथ शिष्टाचार बरतूँगी। बड़ों को सम्मान और छोटों को स्नेह देने में प्रमाद न होने दूँगी।
- पति की प्रगति में समुचित योगदान देती रहूँगी। साधना-सेवा जैसे कार्यों में पति के लिए बाधक नहीं, सहायक बनूँगी। आलस्य को छोड़कर परिश्रमी स्वभाव बनाऊँगी। स्वच्छता, व्यवस्था एवं अन्य कार्यों को पूरी तत्परता से सम्भालूँगी।
- पतिव्रत धर्म का पालन करूँगी। अपने विचार एवं आचरण इसी मर्यादा के अनुरूप विकसित करूँगी। पति के प्रति श्रद्धा भाव बनाए रखकर सदैव उनके अनुकूल रहूँगी। छल-कपट, न करूँगी।
- सेवा, स्वच्छता, प्रिय भाषण जैसे अभ्यास बढ़ाती रहूँगी। इस प्रकार सदा सबको प्रसन्नता देने वाली बनकर रहूँगी। ईर्ष्या-द्वेष, चुगली, कुढ़न अनावश्यक वार्तालाप जैसे दोषों से बचकर रहूँगी।
- कम खर्च में घर का संचालन करूँगी, फैशन एवं फिजूलखर्ची से बचूँगी। पति के असमर्थ हो जाने पर भी प्रसन्नतापूर्वक सद्गृहस्थ के अनुशासन का पालन करूँगी।
- मतभेद भुलाकर सेवा-साधना करते हुए जीवन भर सक्रिय रहूँगी। कभी भी पति का अपमान न करूँगी।
- प्रतिफल की आशा किये बिना हमेशा अपने कर्त्तव्यों का पालन करूँगी।
- जो पति के पूज्य और श्रद्धा-पात्र हैं, उन्हें सेवा और विनय द्वारा सदैव सन्तुष्ट रखूँगी, ऐसा विश्वास दिलाती हूँ।

Shantikunj, Haridwar • Tel: +91.1334.260602 • Fax: 260866 • Email: shantikunj@awgp.org